'' श्री राधे ''

'' अष्टयाम सेवा सुख दर्शन ''

नागपूर में गुरुपूर्णिमा के महोत्सव पर पूज्य माँ की कृपा से, पूज्य लालनजी ने भक्तों पर आनंद वृष्टी हेतु यह अनूठा कार्यक्रम आयोजित किया था । हमारे प्राणवल्लभ श्री युगल सरकार का '' अष्ट सेवा का क्या अर्थ है व इसे हमें किस तरह करना चाहिए, यह लालनजी ने हमें, श्रीनाथजी बाबा की अष्ट झाँकियो एवं भजनों द्वारा समझाया ।

१) मंगला चरण : पहला प्रहर प्रात : ४-७.०० बजे तक

वेद कहते हैं कि मंगला दर्शन करने से हमारे जीवन में मंगल ही मंगल होगा । लेकिन मंगला में ठाकुरजी को जगाने से पहले, हमें स्वयं को पूरी तरह से जगना है। अर्थात हमें यह समझना है कि, ठाकुरजी की प्राप्ती ही, इस देवदुर्लभ मानवदेह का परम चरम लक्ष्य है। और इसके लिए हमें शरीर से संसार के सारे कार्य करते हुए, अपने मन को केवल ठाकुरजी के ही श्री चरणों में अर्पित करना है। इस तरह भक्ती महारानी हमारे हृदय में प्रवेश करेगी, और फिर ज्ञान और वैराग्य भी उनके पीछे पीछे चले आएँगे । सहज ही ठाकुरजी हमारे हृदय में विराजमान हो जाएँगे । तब जीवन में मंगल ही मंगल होगा ।

२) श्रंगार : दूसरा प्रहर-प्रात : ७.०० से १०.०० बजे तक

हमारा मन बहुत चंचल है इसलिए ठाकुरजी के नित नवीन श्रंगार की पद्धति बनाई गई, जिससे हमारा मन बरबस ही उनमें अटक जाए । यह बात ध्यान रखते हुए, हमें अपनी किशोरीजी और मोहन को रोज नया श्रंगार धारण करना चाहिए । दूसरी महत्वपूर्ण बात ये है कि, श्रीनाथजीबाबा के बाम अंग में किशोरीजी के भाव से श्रंगार किया जाता है क्योंकि यहाँ एक नहीं, दोनों विराजमान हैं यह भावना है।

३) ग्वाल : तीसरा प्रहर - प्रात : १०.०० से १.०० बजे तक

ग्वाल झाँकी की दो विशेषताएँ है।

पहली बात यह है कि ग्वाल उसे कहते है जो गौओं का पालन करता है । 'गौ का अर्थ सिर्फ गाय ही नहीं, हमारी इंद्रियाँ भी होती हैं । इस तरह से, श्री कृष्ण हमारी इंद्रियों का पालन करते हैं । दूसरी विशेषता यह कि इस लीला में वे मल्ल काछ धारण करते हैं। और कहते हैं कि, जीवों तुम एक मात्र मेरी ही शरण में आ जाओ, मैं तुम्हारी रक्षा करने के लिए, मल्ल जैसे वस्त्र धारण करके, तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ ।

४) राजभोग : चौथा प्रहर - दुपहरी १.०० से ४.०० बजे तक

लालनजी ने हमें समझाया कि, जब हम ठाकुरजी को भोग धराने जाते हैं, तब हमें तरह तरह के पकवानों की आवश्यकता नहीं है। और ये भी जरुरी नहीं है कि, हम प्रत्यक्ष उनके सामने ही भोग की थाली धरें । बल्कि जहाँ भी हम बैठे हों और जो भी हमारा भोजन हो, उसे ही हमें, आँख बंद करके, ठाकुरजी का ध्यान करते हुए, उन्हें अर्पण करना है । तो वे उसे तुरंत ग्रहण कर लेंगे क्योंकि वे तो केवल भाव के भूखे हैं । यही सच्ची सेवा है। हमें एक और बात का ध्यान रखना है कि हम घर या ऑफिस के मालिक नहीं हैं मालिक तो एकमात्र ठाकुरजी हैं। ऐसा

भाव रखने से संपत्ती का सही उपयोग होगा, उपभोग नहीं और हमें निश्चित ही ठाकुरजी के श्री चरणों की प्राप्ती हो जाएगी ।

५) उत्थापन : पाँचवा प्रहर - संध्या ४.०० से ७.०० बजे तक

उत्थापन अर्थात ठाकुरजी को जगाने की क्रिया । जब भक्त पूर्णरुप से शरणागत हो जाता है, और उसे यह अटूट विश्वास हो जाता हैं कि, ठाकुर मेरे हैं और मैं उनका हूँ, तब वे उसकी हर सेवा को स्वीकार कर लेते हैं। उसी के आगे पीछे डोलते हैं । उसी का दिया खाते हैं, उस के सुलाने पर सो जाते हैं और जगाने पर जाग जाते हैं। हमें यही भाव रखना चाहिए कि, ठाकुर सदा हमारे साथ हैं और इस विश्वास को और दृढ़ करने का प्रत्यन करना चाहिए ।

६) गौधुली : छटा प्रहर : संध्या ७.०० से १०.०० बजे तक

लालनजी ने हमें समझया कि, गौधुली अर्थात संध्या के समय बहुत निशाचर घूमते हैं । तो हमें ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे वे हमारे अंदर आकर निवास करने लगें। जितना हो सके हमें हमारी साधना- Meditation बढ़ाना है । गौधुली के समय, ठाकुरजी गौ चरण से उडी रज का श्रंगार धारण करते हैं । रज की महिमा बताते हुए संत कहते हैं, '' रज पाए रज जात है, रज जाए रज पाए ।'' अर्थात जो वृंदावन की रज पाए, उसका 'रज -काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद चला जाता है । और जब 'रज' - काम, क्रोध, लोभ इ चले जाएँगे तो ठाकुरजी के चरणों की प्रीति प्राप्त हो जाएगी ।

७) शयन : सातवाँ प्रहर : रात्रो १०.०० से १.०० बजे तक

शयन का अर्थ है ठाकुरजी को रात्री के समय पौढ़ाना । ये हम सही ढंग से तब कर पाँएगे जब हम ये तीन बातें समझेंगे ।

श : से शमन करो । इंद्रियों का इच्छाओं का,शमन करो ।

य : से योग करे । अष्टांग योग - (जप, नियम, आसन, प्रत्साहार, ध्यान, आदि)धारण करेंगे तो जीवन में शमन करने में सहायता मिलेगी ।

न : निशचय करो । जिस दिन दृढ़ संकल्प कर लेंगे, उस दिन से जीवन में सुख की अनुभूति होने लगेगी ।

८) रासबिहार : अंतिम रस

लालजी हमें समझाते हैं कि हमारे गुरुजी, हमें इस रस का पान कराना चाहते हैं । लेकिन हमने बर्तन उलटा रखा हुआ है। अगर इस प्रेमवृष्टी में हमें भीगना है, तो हमें अपने मन को गुरुजी के श्रीचरणों में समर्पित करना होगा। साथ में पूर्णत : विश्वास , श्रद्धा और आस्था रखनी होगी । तब ये बर्तन सीधा होने लगेगा । धीरे धीरे रास बिहारी अपने हृदय में प्रकट होने लगेंगे । हमें हमारे Ultimate Goal, परम चरम लक्ष्य की प्राप्ती हो जाएगी ।

बोलिए वृंदावन बिहारी लाल की जय ।

जय जय श्री राधे, जय जय श्री राधे, जय जय श्री राधे ।